卐 नमो राघवाय 卐

श्रीराघवसेवा

बालरूप श्रीराघव सरकार

:: सम्पादक ::

धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

:: प्रकाशक ::

श्रीतुलसीपीठ आमोदवन
चित्रकूट

धर्मचक्रवर्ती कविकुलरत्न श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर
श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

卐 श्रीः 卐

नमो राघवाय

श्रीराघवसेवा

सम्पादक

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय कविकुलरत्न वाचस्पति

श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

जीवनपर्यन्त कुलाधिपति

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलाङ्ग विश्वविद्यालय

चित्रकूट (उ०प्र०)

प्रकाशक

श्रीतुलसीपीठ, आमोदवन

पो० नयागाँव चित्रकूट

जनपद- सतना (म०प्र०) पिन-४८५३३१

प्रकाशक-

श्रीतुलसीपीठ आमोदवन

पो० नयागाँव चित्रकूट

सतना (म.प्र.)

JANUARY 14, 2005

सर्वाधिकार- सम्पादकाधीन

द्वितीय संस्करण- श्रीगुरुपूर्णिमा संवत् २०६८

(१५ जुलाई २०११)

पुस्तक प्राप्ति स्थान -

श्रीतुलसीपीठ आमोदवन पो० नया गाँव चित्रकूट

जनपद-सतना (म०प्र०) पिन-४८५३३१

न्यौछावर - २०=०० (बीस रुपये मात्र)

मुद्रक-

श्रीराघव प्रिंटर्स

जी-१७, तिरुपति प्लाजा (निकट बच्चा पार्क)

मेरठ (उ.प्र.)

केवल मुद्रण कार्य

卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

पुरोवाक्

ध्यायामि परमं ब्रह्म कौसल्योत्संगलालितम्।
रामं नीलाम्बुजश्यामं राघवं धूरिधूसरम्।।

समस्त श्रीराघवजू के उपासक बहिनों एवं भाइयों को नमो राघवाय करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर आज की भागदौड़ वाली परिस्थिति में मनुष्य का जीवन एक यंत्र बनकर नीरस और शुष्क बनता जा रहा है और साथ ही साथ उसके लिए समय की भी बहुत कमी होती जा रही है। उसे आध्यात्मिक शांति के साथ स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि भी चाहिए जो भगवान श्रीरामराघवसरकार की उपासना के बिना संभव ही नहीं है, क्योंकि भगवान राम वर्तमान की प्रत्येक चुनौती के शाश्वत समाधान हैं।

अतः थोड़े समय में सामान्य गृहस्थ जिस प्रकार से शास्त्र विधि के अनुसार बालरूप राम श्रीराघव सरकार की सेवा करके शान्ति, सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि प्राप्त कर सकता है वह विधि इस पुस्तक में अति संक्षेप में निर्दिष्ट की जा रही है।

प्रत्येक गृहस्थ के घर में बालरूप श्रीराघव या बालगोपाल की सेवा होनी ही चाहिए और प्रभु को स्नान, चन्दन, धूप, दीपक,

नैवेद्य कराकर आरती करनी चाहिए। इससे सबका सर्वविध मंगल हो जाता है। जैसा कि श्रीरामायण जी में गोस्वामी तुलसीदास जी भी आज्ञा करते हैं।

तुमहिं निबेदित भोजन करहीं।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।।
कर नित करहिं राम पद पूजा।
राम भरोस हृदय नहिं दूजा।।

(श्रीमानस २/१२९/२ तथा ४)

यद्यपि मैं संपूर्ण वैदिक मंत्रों से ही नित्य श्रीराघव सेवा करता हूँ किन्तु यहाँ सर्वसामान्य के लिए पौराणिक श्लोकों का निर्देश भी किया जा रहा है। बहुत अनिवार्य है कि 'श्रीराघवसेवा' प्रातःकाल शीघ्र ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए। बहुत देरी से पूजा-पाठ-जप आदि करना शास्त्रों में निषिद्ध कहा गया है।

इति निर्दिशति

-राघवीयो जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य *(चित्रकूटधाम)*

卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

श्रीराघवसेवा

जागरण

कौं कौसल्यायै नमः।

कौसल्यासु प्रजाराम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्त्तव्यं दैवमाह्निकम्।।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो राम उत्तिष्ठ भरताग्रजम्।
उत्तिष्ठ राघवोदार जगदेतत् सुखी कुरू।।

मंगल नीराजना

ॐ अग्निर्देवतावातोदेवतासूर्योदेवताचन्द्रमादेवता-
वसवोदेवतारुद्रादेवतादित्यादेवतामरुतोदेवताविश्वेदेवा
देवताबृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

श्रीगणेशपूजनम्

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

वैदिकों को श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष से अभिषेक करना चाहिये और सामान्य गृहस्थ को द्वादश नामस्तोत्र से अभिषेक करना चाहिये जो यहाँ निर्दिष्ट है–

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नं भवेत्तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।
गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अथ श्रीशिवपूजनम्

नमः शशांकशेखराय। नमः साम्बशिवाय।

वैदिकों के लिए रुद्रसूक्त से शिवाभिषेक तथा सर्वसामान्य को श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी विरचित रुद्राष्टक से शिवाभिषेक करना चाहिए जो यहाँ लिखा जा रहा है–

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं। गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीशम्।।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।
तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं। मनोभूत कोटिप्रभा श्रीशरीरम्।।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा।।
चलत्कुण्डलं भ्रू त्रिनेत्रं विशालं। प्रसन्ननं नीलकंठं दयालम्।।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।।
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।।
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्।।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति।।
नमः शशांकशेखराय। गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।।

श्रीसाम्बशिवाय नमः।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारमेकबिल्वं शिवार्पणम्।।
बिल्वपत्रं समर्पयामि। श्रीसाम्बशिवाय नमः।

अथ श्रीशालग्रामपूजनम्

श्रीशालग्राम जी का चरणामृत बनाने के लिए नौ वस्तुओं की अपेक्षा होती है। शुद्ध जल, ताम्रपात्र, षडक्षरराम मंत्र का यंत्र, चंदन, शंख, मंत्रोच्चारण, घण्टानाद, तुलसी तथा गोमतीचक्र।

वैदिकों के लिए पुरुषसूक्त द्वारा अभिषेक तथा सर्वसामान्य के लिए अपने गुरुमंत्र का जप करते हुए अभिषेक करना चाहिए। अभिषेक के अंत में यह मंत्र बोलना चाहिए–

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये
सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम्।।

चन्दनं समर्पयामि श्रीशालग्रामाय नमः
श्रियं (कुमकुम) समर्पयामि श्रीशालग्रामाय नमः।
तुलसि श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये।।
तुलसीदलं समर्पयामि श्रीशालग्रामाय नमः।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं वै गृहाण भो।।
पुष्पाणि समर्पयामि श्रीशालग्रामाय नमः।

अथ श्रीहनुमत्पूजनम्

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

स्नानं, चन्दनं पुष्पं समर्पयामि।

इसके अनन्तर श्रीहनुमानचालीसा का पाठ अवश्य करना चाहिए।

अथ श्रीराघवसेवा

स्नानम्

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे।
स्मरेत् कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम्।।
तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्च वेष्टितम्।
स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्त्रादित्यतेजसम्।।
पितुरंकगतं राममिन्द्रनीलमणिप्रभम्।

कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम्।।
भानुकोटिप्रतीकाशकिरीटेन विराजितम्।
रत्नग्रैवेयकेयूररत्नकुण्डलमण्डितम् ।।
रत्नकङ्कणमंजीरकटिसूत्रैरलंकृतम् ।
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम्।।
दिव्यरत्नसमायुक्तमुद्रिकाभिरलंकृतम् ।
राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्स्मिताननम्।।

(श्रीरामस्तवराज १० से १५ तक)

अभिषेकं समर्पयामि भगवते श्रीराघवाय नमो नमः।
तिलकं पुष्पं शृङ्गारं च समर्पयामि।

शृङ्गार करके श्रीराघव जू को सिंहासन पर पधराकर यह स्तुति करनी चाहिए-

::स्तुतिः:

सोरठा-प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन शोभा निरखि।
मुनिबर परम प्रबीन, जोरि पानि अस्तुति करत।।

नमामि भक्त वत्सलम्। कृपालुशीलकोमलम्।।
भजामि ते पदाम्बुजम्। अकामिनां स्वधामदम्।।
निकामश्यामसुन्दरम् । भवाम्बुनाथमन्दरम् ।।
प्रफुल्लकञ्जलोचनम् । मदादिदोषमोचनम् ।।
प्रलम्बबाहुविक्रमं । प्रभोऽप्रमेयवैभवम् ।।
निषंगचापसायकम् । धरंत्रिलोकनायकम् ।।

दिनेशवंशमण्डनम् । महेशचापखण्डनम् ।।
मुनीन्द्रसन्तरञ्जनम् । सुरारिवृन्दभञ्जनम् ।।
मनोजवैरिवन्दितम् । अजादिदेवसेवितम् ।।
विशुद्धबोधविग्रहम् । समस्तदूषणापहम् ।।
नमामि इन्दिरापतिम्। सुखाकरं सतां गतिम्।।
भजे सशक्तिसानुजम्। शचीपतिप्रियानुजम् ।।
त्वदंघ्रिमूल ये नराः। भजन्ति हीनमत्सराः।।
पतंति नो भवार्णवे। वितर्कवीचि संकुले।।
विविक्तवासिनः सदा। भजन्ति मुक्तये मुदा।।
निरस्य इन्द्रियादिकम्। प्रयान्ति ते गतिं स्वकाम्।।
त्वमेकमद्भुतं प्रभुम्। निरीहमीश्वरं विभुम्।।
जगद्गुरुं च शाश्वतम्। तुरीयमेव केवलम्।।
भजामि भाववल्लभम्। कुयोगिनां सुदुर्लभम्।।
स्वभक्तकल्पपादपम् । समस्तसेव्यमन्वहम् ।।
अनूपरूपभूपतिम् । नतोऽहमुर्विजापतिम् ।।
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्जभक्ति देहि मे।।
पठन्ति ये स्तवं त्विदम्। नरादरेण ते पदम्।।
व्रजन्ति नात्र संशयम्। त्वदीय भक्ति संयुताः।।

दोहा-बिनती करि मुनि नाइ सिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि।।

(श्रीरामचरितमानस ३/४)

धूपम् : ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यागुं शूद्रो अजायत।।
धूपमाघ्रायामि भगवते राघवाय नमो नमः।।

दीपम् : ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।
दीपं दर्शयामि भगवते राघवाय नमो नमः।।

नैवेद्यम् : ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षगुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान् अकल्पयन्।।

विशेषः भगवान् के नैवेद्य सामग्री में शुद्धता का ध्यान रखें एवं श्रीतुलसीदल पधराकर गरुड़ घंटी बजाकर प्रेम से भोग लगाएँ और नीचे के श्लोक पढ़ें–

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापान समायुक्त पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।
तुलसीदलमात्रेण जलस्य चुल्लुकेन च।
विक्रीणीते स्वमात्मानं भक्तार्थं भक्तवत्सलः।।

ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ अपानाय स्वाहा।

ॐ व्यानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ दाशरथाय विद्महे। सीतारामाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

(इस श्रीराम गायत्रीमंत्र का नैवेद्य कराते समय कम से कम ११ बार जप करें)

नैवेद्यं निवेदयामि भगवते श्रीराघवाय नमो नमः।

आचमनम्

श्री रामाय नमः। श्रीरामभद्राय नमः। श्रीरामचन्द्राय नमः।

इन तीन मंत्रों से तीन बार आचमन कराएँ।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि। प्रोक्षणं समर्पयामि।

(भगवान को रुमाल दिखाएँ)

मुखवासार्थे लवंगं (लौंग) समर्पयामि।

आरार्तिक्यम्

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः

सूर्यः स्वाहा अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

विशेष- श्रीराघवजू को वार के ग्रह के रंग के अनुसार वस्त्र धारण कराने चाहिये। यथा- सोमवार को श्वेत (सफेद), मंगलवार को अरुण (लाल), बुधवार को हरित (हरा), गुरुवार को पीत (पीला), शुक्रवार को श्वेत (सफेद), शनिवार को नीला, रविवार को अरुण (गुलाबी)।

आरती में वार के अनुसार पीताम्बरधारिन् के स्थान पर उस रंग का नाम जोड़ कर बोलना चाहिये जैसे सोमवार को शुभ्राम्बरधारिन्।

::आरती::

वन्दे श्रीरामं प्रभु वन्दे श्रीरामम्।
मुनिजनमनोऽभिरामं नवमेघश्यामम्।
।।जय राम जय श्रीराम।।

पूर्णब्रह्मनिष्कामं पूरितजनकामम् प्रभु पूरितजनकामम्।
निजजनशोकविरामं व्रीडितशतकामम्।।
।।जय राम जय श्रीराम।।

तरुणतमालमनोहर रघुवर दनुजारे प्रभु रघुवरदनुजारे।
तूणशरासनशरधर दीनं पाहि हरे।।
।।जय राम जय श्रीराम।।

समरनिहतदशकन्धर सेवकभयहारिन् प्रभु सेवकभयहारिन्।
भवपाथोनिधिमन्दर दण्डकवनचारिन्।।
।।जय राम जय श्रीराम।।
विधुमुख जलजविलोचन पीताम्बरधारिन् प्रभु पीताम्बरधारिन्।
कोसलपुरजनरञ्जन हनुमत्सुखकारिन्।।
।।जय राम जय श्रीराम।।
भरतचकोरनिशेषं रिपुसूदनबन्धुम् प्रभु रिपुसूदनबन्धुम्।
शरणागतसुरधेनुं नौमि कृपासिन्धुम्।।
।।जय राम जय श्रीराम।।
जय जय भुवनविमोहन जय करुणासिन्धो प्रभु जय करुणासिन्धो।
जय सीतावर सुन्दर जय लक्ष्मणबन्धो।।
।।जय राम जय श्रीराम।।
दर्शय निजमुखकमलं भवसागरसेतो प्रभु भवसागरसेतो।
हर "गिरिधर" भवभारम् दिनकरकुलकेतो।।
।।जय राम जय श्रीराम।।

वन्दे श्रीरामं प्रभु वन्दे श्रीरामम्।
मुनिजनमनोऽभिरामं नवमेघश्यामम्।
।।जय राम जय श्रीराम।।
अनया नीराजनया भगवान् श्रीराघवः प्रीयतां न मम।

मंगलं कोसलेन्द्राय राघवेन्द्राय मंगलम्।
मंगलं राजराजाय रामभद्राय मंगलम्।।
शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं राघवोपरि।
अंगलग्नं मनुष्याणां पातकानां शतं हरेत्।।

आरती के चारों ओर शंख से दाहिनी ओर को जल फेरकर अपने ऊपर जल छिड़कें साथ ही उपस्थितजनों के ऊपर भी।

मंगलं ह्याप्तकामाय पूर्णकामाय मंगलम्।
मंगलं जानकीशाय रामचन्द्राय मंगलम्।।
मंगलं श्रीमुकुन्दाय कोसल्याक्रोडवर्तिने।
प्रपन्नपरिजाताय राघवाय च मंगलम्।।
मंगलं आञ्जनेयाय वानरेशाय मंगलम्।
मंगलं रामदूताय वायुपुत्राय मंगलम्।।
मंगलं नीलकंठाय मंगलं शूलपाणये।
मंगलं राघवेशाय माधवेशाय मंगलम्।।
मंगलम् मंगलम् मंगलम्।।

सब जयघोष करें

श्रीरामकृष्णदेव की जय हो। श्रीशालग्राम भगवान् की जय हो। श्रीसीताराम भगवान् की जय हो। श्रीराधागोविन्द भगवान् की जय हो। जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य भगवान् की जय हो। अवध सरयूधाम की जय हो। चित्रकूटकामदमंदाकिनी की जय हो। प्रातःकाल शृंगार समर्चन नीराजना की जय जय श्रीसीताराम।

::स्तुतिः:

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्याहितकारी।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप निहारी।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।

भूषन बनमाला नयन बिशाला शोभासिंधु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहिं गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उदर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियशीला यह सुख परम अनूपा।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।
दोहा- बिप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार।।

(श्रीरामचरितमानस १/१९२)

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्यजी महाराज द्वारा विरचित

::भगवती श्रीसीताजी की आरती::

भइ प्रगट किशोरी, धरनि निहोरी, जनक नृपति सुखकारी।
अनुपम बपुधारी, रूप सँवारी, आदि शक्ति सुकुमारी।।
मनि कनक सिंघासन, कृतवर आसन, शशि शत शत उजियारी।

शिर मुकुट बिराजे, भूषन साजे, नृप लखि भए सुखारी।।
सखि आठ सयानी, मन हुलसानी, सेवहिं शील सुहाई।
नरपति बड़भागी, अति अनुरागी, अस्तुति कर मन लाई।।
जय जय जय सीते, श्रुतिगन गीते, जेहिं शिव शारद गाई।
सो मम हित करनी, भवभय हरनी, प्रगट भईं श्री आई।।
नित रघुवर माया, भुवन निकाया, रचइ जासु रुख पाई।
सोइ अगजग माता, निज जनत्राता, प्रगटीं मम ढिग आई।।
कन्या तनु लीजै, अतिसुख दीजै, रुचिर रूप सुखदाई।
शिशु लीला करिये, रुचि अनुसरिये, मोरि सुता हरषाई।।
सुनि भूपति बानी, मन मुसुकानी, बनीं सुता शिशु सीता।
तब रोदन ठानी, सुनि हरषानी, रानी परम बिनीता।।
लिये गोद सुनैना, जल भरि नैना, नाचत गावत गीता।
यह सुजस जे गावहिं, श्रीपद पावहिं, ते न होहिं भव भीता।।

दोहा–

रामचन्द्र सुख करन हित, प्रगटीं मख महि सीय।
'गिरिधर' स्वामिनि जग जननि, चरित करत कमनीय।।

जनकपुर जनकललली जी की जय
अयोध्या राम जी लला की जय

सियावर रामचन्द्र की जय, श्री अयोध्या राम जी लला की जय, श्रीजनकपुर जनकललली जी की जय, श्रीपवनसुत हनुमान जी की जय, श्रीउमापति महादेव जी की जय, श्रीवृन्दावन कृष्णबलदाउ जी की जय, श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी की जय, बोलो भाई सब सन्तन की जय। जय जय श्रीसीताराम।

पुष्पांजलि

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौमहासायकचारुचापम्
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।
नीलाम्बुदश्यामलदेहकान्तिम्
राधासमालंकृतवामभागम्।
वंशीधरं यष्टिधरं मुकुन्दम्
नमामि कृष्णं यदुवंशनाथम्।।
यदि हरोऽसि तदा हर पातकम्
यदि शिवोऽसि तदा कुरु मे शिवम्।
यदि भवोऽसि तदा भवभीतिहा
शमय दुःखमिदं यदि शंकरः।।
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहम्
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि।।
कन्दावदातं जनपारिजातम् काकानुगं कल्पितकाकपक्षम्।
श्रीराघवं बाणधनुर्दधानं वक्रालकं बालकमाश्रयामि।।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नाना सुगन्धपुष्पाढ्यो यथाकालसमुद्भवः।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृह्यतां रघुसत्तम।।
मंत्र पुष्पांजलिं समर्पयामि भगवते श्रीराघवाय नमो नमः।

श्रीसीतानाथसमारम्भां श्रीरामानन्दार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे श्रीगुरुपरम्पराम्।।
श्रीगुरवेनमः श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः।।
हे राघव महाबाहो रामराजीवलोचन।
मम प्रार्थयमानस्य भव लोचनगोचरः।।
पाहि पाहि महाराज पाहि राजीवलोचन।
पाहि मां जानकीनाथ घोरसंसारसागरात्।।
पाहि मां करुणासिन्धो पाहि मां भक्तवत्सल।
पाहि मां पापिनं राम कलेः कलिमलापह।।
(इन श्लोकों को पढ़कर तीन बार दण्डवत् करना चाहिए)

कीर्तन

हम तो हमारे राघवजू के राघवजू हमारे हैं।
इष्टदेव मम बालक रामा। राघवजू हमारे हैं।
शोभा बपुष कोटि शत कामा। राघवजू हमारे हैं।।
मन क्रम बचन अगोचर जोई। राघवजू हमारे हैं।
दशरथ अजिर बिचर प्रभु सोई। राघवजू हमारे हैं।
करतल बान धनुष अति सोहा। राघवजू हमारे हैं।
देखत रूप चराचर मोहा। राघवजू हमारे हैं।
बन्दउँ बालरूप सोइ रामू। राघवजू हमारे हैं।
सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू। राघवजू हमारे हैं।
मंगल भवन अमंगल हारी। राघवजू हमारे हैं।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी। राघवजू हमारे हैं।
दोहा- जय जय राघव राम शिशु नख शिख ललित उदार।
जय 'गिरिधर' के प्राणधन जय मुन्ना सरकार।।
बोलो मुन्नासरकार की जय हो। नखशिख सुभगशृंगार की जय हो,
बोलो राघव सरकार की जय हो। जय जय श्रीसीताराम।

चरणामृत लेने का मंत्र

अकालमृत्युहरणं सर्वबाधाविनाशनम्।
श्रीरामपादाऽमृतं पीत्वा श्रीरामभक्त्यै प्रकल्पते।।

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, गौमाता, गंगामाता, भारतमाता की जय हो।

।।जय जय श्रीसीताराम।।

श्रीहनुमान चालीसा

::दोहा::

श्रीगुरुचरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जस जो दायक फल चारि।।
बुद्धि हीन तनु जानिके सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहि हरहु कलेश बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कञ्चन बरन बिराज सुबेषा।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ छाजै।।
शंकर स्वयं केशरीनन्दन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर।

राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सँजीवनि लखन जियाए।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाए।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।
नारद शारद सहित अहीशा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सकैं कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरैं सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम राय सिरताजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोउ लावै।
तासु अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन्ह जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहउ रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावैं।
जनम जनम के दुख बिसरावैं।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
यह शत बार पाठ कर जोई।
छूटै बन्दि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

::दोहा::

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

।।सियावर रामचन्द्र जी की जय।।
।।पवनसुत हनुमान जी की जय।।
।। गोस्वामी तुलसीदास जी की जय।।

श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्। वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्।।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।।१।।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्।।२।।
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्।।३।।
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः।।४।।

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः।।५।।
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः।।६।।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः।।७।।
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।।८।।
जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः।।९।।
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्।।१०।।
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः।।११।।
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।१२।।
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण सामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः।।१३।।
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम्।।१४।।
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः।।१५।।

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः।।१६।।
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ।।१७।।
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।।१८।।
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ।।१९।।
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्।।२०।।
सनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः।।२१।।
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः।।२२।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः।।२३।।
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः।।२४।।
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः।।२५।।

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्।।२६।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।२७।।
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम।।२८।।
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये।।२९।।
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने।।३०।।
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्।।३१।।
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।३२।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।३३।।
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।३४।।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।३५।।
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्।।३६।।
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर।।३७।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनामतातुल्यं रामनाम वरानने।।३८।।

इति श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्

हनुमानबाहुक

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबिबालबरनतनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुकी काल जनु।।
गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव।
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव।।
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट।
गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन, सकल-संकट-बिकट।।१।।

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन।
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन।।
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।
कपिस केस, करकस लँगूर, खल-दल बल भानन।।
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।
संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहूँ नहिं आवत निकट।।२।।

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-सम समरत्थ सूरो।
बाँकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो।।
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो।

दुवन-दल-दमन को कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रूरो।।३।।

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो।।
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो।।४।।

भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो।।
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूं तें घाटि नभतल भो।
नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखे जग जीवन को फल भो।।५।।

गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो।।
संकटसमाज असमंजस भो रामराज
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो।।६।।

कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।
जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो।।
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधन को
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान-
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो।।७।।

दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो।।

दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुणवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो।।८।।

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप-ताप-तिमिर तुहिनबिघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको।।
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को।।९।।

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको।।
दुर्जन को कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीर को।।१०।।

रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि, हर
मीच मारिबे को, ज्याइबे को सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिवे को हिम भानु भो।।
खल-दुख-दोषिबे को, जन-परितोषिबे को,
माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो।
आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो।।११।।

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँककी।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँककी।।
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँककी।
सब दिन रूरो परे पूरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँककी।।१२।।

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,

तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी।।
केसरी किसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।
बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की।।१३।।

करुनानिधान, बलबुद्धि के निधान, मोद-
महिमानिधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ।
वामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम
लेत-देत अर्थ-धर्म काम निरबान हौ।
आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक-बेदबिधि के बिदुष हनुमान हौ।
मन की, बचन की, करम की तिहूं प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ।।१४।।

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं।
देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं।।
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।

बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं।।१५।।

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो।।
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तें आगेहुँ को होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो।।१६।।

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिन के उर साले।।
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले।
बूढ़ भये बलि, मेरिहि बार, कि हारि परै बहुतै नत पाले।।१७।।

सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवासे।
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से।।
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख-दोष दवा-से।
बानर-बाज बढ़े खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से।।१८।।

अच्छ बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो।।
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो।।
पापतें, सापतें, ताप तिहूं तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो।।१९।।

जानत जहान हनुमान को निबाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये।।
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये।।२०।।

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये।।
बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये।
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये।।२१।।

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये।
राम के गुलामनिको कामतरु रामदूत,

मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये।।
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी-ज्यौं पकरिकै बदन विदारिये।।२२।।

राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निवारिये।
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये।।
कूदिये कृपालु तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लङ्किनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये।।२३।।

लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूं निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीव जाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये।।
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।

बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये।।२४।।

करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी।।
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी-ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी।।२५।।

भालकी कि कालकी कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी।
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी।।
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी।
आन हनुमान की दोहाई बलवान की
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बाँहकी।।२६।।

सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लङ्किनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है।।
तोरि जमकातर मदोदरि कढ़ोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद महतारी है।
भीर बाँहपीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है।।२७।।

तेरी बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी।
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी।।
साम दान भेद बिबिध बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोटी चोर साहुकी।
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहुकी।।२८।।

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यौं कृपाल नतपाल पालि पोसो है।
कीन्हीं है सँभार सार अञ्जनीकुमार बीर,

आपनो बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है।
इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है।।२९।।

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है।
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है।।३०।।

दूत रामराय को, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको।।
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन कायको।

थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुलसीको,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभाय को।।३१।।

देवी देव दनुज मनु मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी बाम,
रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं।।
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं।।३२।।

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के।
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगर के।।३३।।

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये।।
अंबु तू हौं अंबुचर, अंबू तू हौं डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँह पर लामी लूम फेरिये।।३४।।

रामगुलाम तुही हनुमान
गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौ बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो।।
बाँहकी बेदन बाँहपगार
पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्री रघुबीर निवारिये पीर
रहौ दरबार परो लटि लूलो।।३५।।

कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभाव की सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,

सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे।।
लायी तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहूं तावरे।
भूतनि की आपनी पराये की कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे।।३६।।

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
देवभूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है।।
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,
ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभज के किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूं भई है।।३७।।

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।
पर्‌यो लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठी तोरि तरकितराक हौं।।
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अञ्जनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।

तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौ।।३८।।

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को।।
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहोइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय की।।३९।।

जिओं जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको।
तुलसी के दुहूं हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको।।
मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको।।
भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को।।४०।।

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेस को महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै।।
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजै तुलसीको जानि जन फुरकै।।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै।।४१।।

कहों हनुमानसों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये।
हरष बिषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये।।
माया जीव काल के करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूं रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये।।४२।।

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,

रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है।।
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजैं तैं उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है।।४३।।

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
रामनाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं।।
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान हैं।।४४।।

।।हनुमानबाहुक पूर्ण।।

❖❖❖❖

❖❖❖

❖❖

❖

नमो राघवाय (गीत)

मेरा मन निरन्तर यही गुन गुनाये।
नमो राघवाय नमो राघवाय।।
न राघव बिना मुझको कुछ भी सुहाये।
नमो राघवाय नमो राघवाय।।१।।

मेरी शक्ति राघव मेरी भक्ति राघव
मेरे मनमें राघव मेरे तन में राघव।
मेरे धन हैं राघव न कोई चुराये
नमो राघवाय नमो राघवाय।।२।।

मेरे मात राघव मेरे तात राघव
सखा मेरे राघव मेरे भ्रात राघव।
मेरी प्रीति की रीति राघव निभाये
नमो राघवाय नमो राघवाय।।३।।

मेरे धर्म राघव मेरे कर्म राघव
नियम मेरे राघव मेरे मर्म राघव।
मुझे अब तो दिनरात राघव ही भाये
नमो राघवाय नमो राघवाय।।४।।

मेरे प्रान राघव मेरे ज्ञान राघव
मेरे चैन राघव मेरे नैन राघव।
सदा कीर्ति राघव की 'गिरिधर' सुनाये
नमो राघवाय नमो राघवाय।।५।।

भगवान् को नैवेद्य (भोजनादि) अर्पित करने की प्रार्थना

आओ भोग लगाओ मेरे राम जी।
आओ भोग लगाओ मेरे राम जी।।
आप भी आओ संग में सीता जी को लाओ
रुचि-रुचि भोग लगाओ मेरे राम जी। आओ भोग....
ऐसी बिधि से भोग लगाओ
सब अमरित हो जाए मेरे राम जी। आओ भोग....
जो जन याको जूठन पावै
सोइ तुम्हरो होइ जाए मेरे राम जी। आओ भोग....
'गिरिधर' दोउ कर जोरि निहोरत
मधुर-मधुर मुसकाओ मेरे राम जी। आओ भोग....

जयघोष

सियावर रामचन्द्र भगवान की - जय हो
अञ्जनावर्धन प्रभु श्रीहनुमान जी महाराज की - जय हो
गुरुदेव भगवान् की - जय हो
सन्त भगवन्त की - जय हो
धर्म की - जय हो
अधर्म का - नाश हो
प्राणियों में - सद्भावना हो
विश्व का - कल्याण हो
गौमाता की - जय हो
गंगा माता की - जय हो
भारत माता की - जय हो
सत्य सनातन धर्म की - जय हो
जय जय श्री सीताराम